24-08-09 प्रात:मुरली ओम् शान्ति ''बापदादा'' मधुबन

''मीठे बच्चे – बाप आया है तुम्हें सच्ची स्वतन्त्रता देने, जमघटों की सजाओं से मुक्त करने, रावण की परतन्त्रता से छुड़ाने''

प्रश्नः- बाप और तुम बच्चों की समझानी में मुख्य अन्तर कौन-सा है?

उत्तरः- बाप जब समझाते हैं तो 'मीठे बच्चे' कहकर समझाते हैं, जिससे बाप की बात का तीर लगता है। तुम बच्चे आपस में भाइयों को समझाते हो, 'मीठे बच्चे' नहीं कह सकते। बाप बड़ा है इसलिए उनकी बात का असर होता है। वह बच्चों को रियलाइज़ कराते हैं–बच्चों, तुम्हें लज्जा नहीं आती, तुम पतित बन गये, अब पावन बनो।

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) एक बाप मिला है इसलिए किसी भी बात का ग़म (चिंता) नहीं करना है। उनकी मत पर चलकर, बेहद का समझदार बन खुशी-खुशी सबका उद्धार करने के निमित्त बनना है।

2) जमघटों की सजाओं से बचने वा सच्ची स्वतन्त्रता पाने के लिए पावन जरूर बनना है। नॉलेज सोर्स आफ इनकम है, इसे धारण कर धनवान बनना है।

वरदानः- स्व के चक्र को जान ज्ञानी तू आत्मा बनने वाले प्रभू प्रिय भव

आत्मा का इस सृष्टि चक्र में क्या-क्या पार्ट है, उसको जानना अर्थात् स्वदर्शन चक्रधारी बनना। पूरे चक्र के ज्ञान को बुद्धि में यथार्थ रीति धारण करना ही स्वदर्शन चक्र चलाना है, स्व के चक्र को जानना अर्थात् ज्ञानी तू आत्मा बनना। ऐसे ज्ञानी तू आत्मा ही प्रभू प्रिय हैं, उनके आगे माया ठहर नहीं सकती। यह स्वदर्शन चक्र ही भविष्य में चक्रवर्ती राजा बना देता है।

स्लोगनः- हर एक बच्चा बाप समान प्रत्यक्ष प्रमाण बनें तो प्रजा जल्दी तैयार हो जायेगी।